१५४. सब मिलके गावो

दोहा : *मिथ्या जगकी मिथ्या बाते, मिथ्या लोग लुगाई ।*
राजा ग्यानी बीर हुवे पर, नाम निशानी नाही ॥
अमर मेहेरका नाम अमर है, अमर प्रेम सहवास ।
पल पल प्रकटे हृदय मे सबके, मिटे मिथ्या आभास ॥

सब मिलके गावो, झूमके गावो, अवतार मेहेरका नाम
अरे भाई तनमनको होवे आराम ॥धृ.॥
जुगजुग गावत ऋषीमुनी ध्यावत, पहुँचे है सब निजधाम ॥

Scanned by CamScanner

मंगल है पावन है नाम मेहेरका
सीतल करे सब ताप त्रिविधका
पगपग दिखावे राह जीवन की, दोष मिटावे तमाम ॥१॥

मुखमें तो सबके आता है मेहेर
लेकिन हृदयसे निकले वो मेहेर
उच्चार आचार और मनका व्यापार, मेहेर समाये तमाम ॥२॥

मेहेरसे होवेगी शांती जगतमे
प्यार की धारा बहेगी जीवनमें
संसारके सब भेद मिटेंगे, मधुसूदन सुखधाम ॥३॥

Scanned by CamScanner